thearyasamaj.org

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष -५७ अंक - २
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक :१००) रु०
आजीवन -१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

माघ फाल्गुन २०७१ वि० फरवरी २०१५

।।ओ३म्।।

आध्यात्मिक महिला सत्संग

सुश्री अञ्जलि आर्या (करनाल) जी के पावन सानिध्य में

११ अप्रैल से १५ अप्रैल २०१५ पर्यन्त, समय -अपराह्न ३ से ५ बजे तक

स्थान :– आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-६, दूरभाष-२२४१ ३४३९

पारिवारिक समस्याओं का आध्यात्मिक निदान
भजन एवं प्रवचन का स्वर्णिम सुयोग

निवेदक

आर्य समाज कलकत्ता		आर्य स्त्री समाज कलकत्ता	
प्रधान	मंत्री	प्रधाना	मन्त्रिणी
मनीराम आर्य	सत्यप्रकाश जायसवाल	आशा अरोड़ा	कविता अग्रवाल

thearyasamaj.org

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर :- आर्य समाज कलकत्ता (युवा-शाखा) द्वारा आयोजित २८वाँ निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर रविवार १८ जनवरी २०१५ को सम्पन्न हुआ । कुल ५४ असहाय, निराश्रित एवं निधन व्यक्तियों के मोतियाबिन्द का शत-प्रतिशत सफल आपरेशन, चिकित्सा विज्ञान की आधुनिकतम पद्धति द्वारा, नगर की कुशल नेत्र सर्जन डॉ० रजनी सर्राफ एवं उनकी मेडिकल टीम के सानिध्य में उनके चेम्बर ४बी, लिटिल रसेल स्ट्रीट में सम्पन्न हुआ । इस आयोजन को सफल बनाने में युवा-शाखा के अध्यक्ष श्री विवेक जायसवाल, शिविर सचिव श्री कृष्ण कुमार जायसवाल एवं शिविर प्रभारी श्री सुदेश कुमार जायसवाल के साथ युवा-शाखा के सदस्य सक्रिय रहे ।

वसन्तोत्सव :- रविवार २५ जनवरी २०१४ को आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में सत्संग के उपरान्त वसन्त पंचमी के अवसर पर वसन्तोत्सव मनाया गया । इस अवसर पर वक्ताओं ने भजन, गीत एवं व्याख्यान प्रस्तुत किया । श्रीमती माधुरी शाह, श्री वीरेश जी आर्य ने भजन प्रस्तुत किया । श्री देवनारायण तिवारी एवं आचार्य देवनारायण जी (मुम्बई) ने वसन्त पर्व पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

स्थिर निधि :- श्री हरनारायण तापड़िया (मुम्बई निवासी) जी ने आचार्य रमाकान्त उपाध्याय जी की स्मृति में आर्य समाज कलकत्ता में रु० ६०,०००/- (साठ हजार रुपये) का एक स्थिर निधि करवाया है । दानी दाता की इच्छानुसार इस राशि से प्राप्त होने वाले ब्याज को आर्य समाज कलकत्ता द्वारा संचालित आर्य कन्या महाविद्यालय एवं रघुमल आर्य विद्यालय के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक अर्जित करने वाले प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को १००० रु० के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा । तथा १००० रु० का पुरस्कार आचार्य रमाकान्त जी उपाध्याय के ग्राम या उनके जिले में किसी एक विद्यालय में कक्षा १२ में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को प्रदान किया जायेगा ।

शुद्धि समाचार :- १. कैथरीन भौमिक, आयु ३८ वर्ष, ने १० नवम्बर २०१४ को ईसाई मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम पूर्व भौमिक रखा गया ।

२. फूलमनि खातून, आयु २२ वर्ष, ने ३० नवम्बर २०१४ को इस्लाम मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अनन्या चक्रवर्ती रखा गया ।

३. मो० मसूद हसन, आयु २६ वर्ष, ने १८ दिसम्बर २०१४ को इस्लाम मत त्याग कर स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अबीर मण्डल रखा गया ।

४. सुदिप्तो सरदार, आयु ३४ वर्ष, ने २३ दिसम्बर २०१४ को ईसाई मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ ।

(कवर शेष पृष्ठ २८ पर)

thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५७ अंक — २

माघ-फाल्गुन : २०७१ वि०
दयानन्दाब्द १९०
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५

फरवरी— २०१५

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्य प्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१.	आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२.	इस अंक की प्रस्तुति		३
३.	जीवन में प्राप्तव्य के लिए प्रार्थना		४
४.	महर्षि वचन-सुधा-४१	- प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७
५.	लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी	- स्वामी सदानन्द सरस्वती	८
६.	यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्व	- श्री खुशहाल चन्द्र आर्य	११
७.	महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में भूमिकाओं की आत्मिक झलक	- पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'	१४
८.	मानव की ऐषणाएं	- श्री कामता प्रसाद सिंह	१७
९.	चाणक्य नीति में वर्णित भगवान राम की महिमा	- प्रो० ओमकुमार आर्य	२१
१०.	योग ही समस्त मानव में एकत्व भावना ला सकता है	- श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'	२५
११.	आर्य जगत् समाचार		२८

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३९
email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

thearyasamaj.org

जीवन में प्राप्तव्य के लिए प्रार्थना

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ।।

ऋग्० २-२१-६

शब्दार्थ :-

इन्द्र	=	हे परमैश्वर्यशाली प्रभो !
श्रेष्ठानि	=	सर्वोत्तम, उपकारी
द्रविणानि	=	धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य
धेहि	=	प्राप्त कराइए
चित्तिम्	=	चित्त, चिन्तन शक्ति
दक्षस्य	=	दक्षता की
सुभगत्वम्	=	सौभाग्य को
अस्मे	=	हमारे लिए, सबके लिए
पोषं रयीणाम्	=	ऐश्वर्यों की पुष्टि
अरिष्टं तनूनाम्	=	शरीर की नीरोगता
स्वाद्मानं वाचः	=	वाणी की मधुरता
अह्नाम् सुदिनत्वम्	=	दिनों की सुदिनता

भावार्थ :- हे परमैश्वर्यशाली प्रभो ! हमारे लिए श्रेष्ठ धन, चित्त एवं विचार की दक्षता, सौभाग्य, पोषणकारी ऐश्वर्य, नीरोग शरीर, वाणी की मधुरिमा, दिनों की शोभनता सुदिनता, अच्छा समय प्रदान कीजिए ।

विचार विन्दु :

१. धन की श्रेष्ठता का स्वरूप ।
२. दक्षता और सौभाग्य क्या है ?
३. शरीर की नीरोगता भी सौभाग्य है ।
४. वाणी की मधुरिमा अकाट्य कवच है ।
५. सफलता का आधार सुदिन ही है ।

व्याख्या

मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठ प्राप्तव्य की कामना, प्रार्थना करते हैं । पितृदेव, गुरुदेव, बड़े लोग छोटों के लिए श्रेष्ठ उपलब्धियों का आशीर्वाद देते हैं ।

इस मंत्र में कई अच्छी वस्तुओं को प्राप्त करने की प्रार्थना हैं - श्रेष्ठ धन, चित्त की दक्षता, पोषण करनेवाला ऐश्वर्य, वाणी में मिठास और जीवन के सभी दिन सुदिन बने रहें ।

भगवान ने हमारा जीवन एक सत्र बनाया है और हमें जीवन में उन्नति प्राप्त करने का आश्वासन भी दिया है । हम सावधान होकर परिश्रमपूर्वक जीवन-यापन करें तो हमारे जीवन में उत्थान, धन-ऐश्वर्य

thearyasamaj.org

की प्राप्ति निश्चित है। ऐश्वर्य रुपये-पैसे का भी होता है, शरीर, विद्या, परिवार, प्रतिष्ठा सब ऐश्वर्य के ही अंग हैं। धन द्रविण उनमें से मुख्य है। धन मात्र एक साधन है। यदि हम अपने धन को अपने और संसार के कल्याण में लगा दें तो यह उसकी श्रेष्ठता है। स्वयं सुखी बनें और दूसरों को भी सुखी बनावें, यही धन का सदुपयोग है। कई बार धन मनुष्य को सुखमी और विलासी बना देता है। कई धन सम्पन्न शराब, जुआ, नाच-रंग आदि पतन के मार्ग में चल पड़ते हैं। यह धन की श्रेष्ठता नहीं, धन बड़ा श्रेष्ठ साधन था किन्तु शराब, जुआ, नाच आदि के विलास ने उसकी श्रेष्ठता नष्ट कर दी। वस्तुतः जब धन से अपनी और संसार की उन्नति होती है तो यह श्रेष्ठ होता है। किन्तु जब धन ही से अपना ही पतन कर लिया तो संसार की उन्नति तो क्या होनी है, धन भी भ्रष्ट-पतित हो गया।

हमारे चित्त में दक्षता आवे। यूं तो दक्षता हमारे सारे कार्य में होनी चाहिए। दक्षता का अर्थ है कि हर कार्य सुन्दर ढंग से हो और उच्च-कोटि का हो तथा समय का भी अपव्यय न हो। सारे कार्य के मूल में मन, बुद्धि और चित्त प्रथम उपकरण है। मन एकाग्र हो, बुद्धि ठीक निर्णय कर सके और चित्त की चेतना और संस्कार ठीक हो तो दक्षता आती है। युधिष्ठिर धर्मराज कहलाते थे। किन्तु मन जुआरी का, चित्त में जुए का संस्कार और बुद्धि का पतन, सब का फल हुआ पाण्डवों की दुर्गति और महाभारत जैसा सर्वनाशी युद्ध। यदि युधिष्ठिर जुआड़ी न होता तो पाण्डवों को वनवास के दुर्दिन न देखने पड़ते। सो भगवान मन, बुद्धि, चित्त सब स्वस्थ सुन्दर रखें।

धन, मन, चित्त, यह सब मिलाकर सौभाग्य बनाता है। हमें यदि श्रेष्ठ धन मिले, सुन्दर चित्त मिले, हमारे जीवन में दक्षता हो तो सब मिलकर हमें सौभाग्यकारी ही बनाता है।

अगली प्रार्थना है कि हमारा धन हमारे लिए पोषणकारी हो। प्रायः धन आता है तो मनुष्य की चिन्ता बढ़ती है, भूख मर जाती है, नींद उड़ जाती है। न भोजन में स्वाद, न निद्रा में आराम, सदा कष्ट ही कष्ट बना रहता है। कहते हैं, हेनरी फोर्ड संसार के बड़े से बड़े धनियों में था, किन्तु न वह दूध-रोटी खा सकता था, न नींद भर सो सकता था। उसने अपने डॉक्टरों से कहा कि हमारी आधी सम्पत्ति ले लो किन्तु हमें भूख, भोजन में स्वाद और रात में भरपूर नींद दे दो। कौन दे सकता है ? धनी का चित्त हमेशा चिन्तित रहता है। धन के नष्ट होने की चिन्ता, व्यवसाय बिगड़ जाने की चिन्ता। इस चिन्ता के आलम में भूख और नींद गई। फिर तो कष्ट ही कष्ट होगा। इसीलिए निरोग शरीर की ही प्रार्थना है।

अगली प्रार्थना वाणी की मिठास है, मधुर वचन सदा, सर्वत्र सुखदायी ही होते हैं -

रहिमन मीठै वचन तै, सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरण एक मंत्र है, तज दै वचन कठोर ।।

मीठी वाणी की और भी बहुत प्रशंसा की जाती है।

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाई कै, जग आपन करि लेय ।।

सचमुच मीठा वचन संसार को अपना बनाने का बड़ा अच्छा मंत्र है। कड़वे वचन, कर्कश-वाणी अपना हृदय तो जलाती ही है, यह दूसरे को भी दुःखी करती है।

अंतिम प्रार्थना है कि हमारे जीवन के सभी दिन सुदिन बने रहें। जीवन में सुदिनता कई बातों पर निर्भर करती है। हमारा शरीर, मन, बुद्धि सब स्वस्थ हों। कार्य करने के साधन सुलभ हों। देश और समाज में सुव्यवस्था हो। देश और समाज में शान्ति और कार्य करने की परिस्थिति हो।

thearyasamaj.org

सुदिनता की प्रार्थना -

इस मंत्र में ऐश्वर्यशाली परमेश्वर से कई वस्तुओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है - श्रेष्ठ धन, मन, चित्त की दक्षता, सौभाग्य, धन की पोषकता, शारीरिक स्वास्थ्य, वाणी में मिठास और दिनों की सुदिनता । इन सातों में प्रथम छः व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत चेष्टा, साधना आदि की उपलब्धि हैं किन्तु सुदिनता, अच्छे दिन, समय की अनुकूलता, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वस्तु हैं । प्रकृति का प्रकोप हो जाये या तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक विपत्तियां आ पड़ें तो मनुष्य की सारी उपलब्धियां कुछ दिनों के लिए निष्क्रिय सी हो जाती हैं क्योंकि यह दुर्दिन का समय है, दुष्काल है, सुदिन, सुकाल या सुसमय नहीं है । ऐसी परिस्थिति में सुदिनता की प्रार्थना का महत्व समझ में आता है ।

कभी - कभी अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों का समय होता है जैसे सन् १९६२ में चीन ने भारत के पूर्वी - उत्तरी भाग पर आक्रमण कर दिया था या इसी तरह किसी स्थान पर दो वर्गों में दंगा-फसाद, मार-काट, अग्निकांड, कुछ भी आरम्भ हो जाये तो कार्य करने की सुदिनता नहीं रहती ।

सुदिनता के लिए कई बातें आवश्यक हैं -

- अपना शरीर स्वस्थ नीरोग हो ।
- मन में उल्लास उत्साह हो ।
- परिवार या समाज में कलह न हो ।
- प्राकृतिक विपत्ति - सूखा, बाढ़, भूचाल आदि न हो ।
- राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सुव्यवस्था हो ।
- ऐसी ही और भी परिस्थितियां अनुकूल हों ।

अतः सुदिनता की प्रार्थना भले ही अन्त में आयी है किन्तु मनुष्य के जीवन में सामाजिक परिस्थितियां, राजकीय शान्ति, सुव्यवस्थाएं और प्राकृतिक परिस्थितियों की अनुकूलता सफलता और उपलब्धि के लिए अत्यन्त आवश्यक है । इसीलिए सुदिनता की प्रार्थना महत्वपूर्ण है ।

साभार : वेद-वीथिका

प्रगति मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, दिल्ली

प्रगति मैदान दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १४ फरवरी २०१५ से २२ फरवरी २०१५ तक लगने जा रहा है । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली के द्वारा भी वैदिक साहित्य के विक्रय एवं प्रचार हेतु दुकानें लगाई जा रही हैं । जो कि प्रचार हेतु छूट पर दी जायेगी, कुछ साहित्य पर विशेष छूट भी दी जायेगी । तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत कालजयी ग्रन्थ **सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारार्थ मात्र १० रुपये में उपलब्ध कराया जायेगा ।** आप सभी बच्चों, सगे सम्बन्धियों एवं इष्ट मित्रों सहित वैदिक साहित्य क्रय कर वेद, धर्म, शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता तथा अपने प्राचीन भारतीय गौरव का ज्ञान प्राप्त कर स्वयं लाभ उठाएँ और दूसरों को भी प्रेरणा दें ।

आशा है आप अधिक से अधिक संख्या में आकर प्रचार-प्रसार में सहयोग देंगे और साहित्य से लाभ उठाएंगे ।

भवदीय —

एस० पी० सिंह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-१

thearyasamaj.org

महर्षि वचन सुधा (४१)

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

"राजा कैसा हो ?"

"राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजा में पुत्रवत् वर्त्ते और उन को पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा सत्य यत्न किया करे ।"

–सत्यार्थ० स्वमन्तव्यामनन्तव्य०

व्याख्या–स्वामी दयानन्द जी सिद्धान्त रूप में जनतन्त्र के समर्थक हैं । उनके सिद्धान्त में राजा प्रजा से निर्वाचित होता है और राजा को तभी तक शासन करने का अधिकार है जब तक प्रजा उसको चाहती है । प्रजा यदि राजा के शासन से असन्तुष्ट हो जाय और राजा को पसन्द न करे तो राजा को राज काज से अलग कर देना चाहिये । क्रियात्मक रूप में यह कठिन काम है, किन्तु राजा स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता, उसे सभा, समितियों और मंत्रिमण्डल के अनुकूल ही शासन करने का अधिकार है ।

स्वामी जी के समय में, जब उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश लिखा था, तब भारतवर्ष में अंग्रेजों का राज्य था । इंग्लैंड का राजा ही भारतवर्ष का राजा था । अंग्रेजों का शासन कहने को तो प्रजातन्त्र था किन्तु भारत में तो गवर्नर जनरल का एकाधिपत्य था । यह प्रजातन्त्र शासन केवल इंग्लैण्ड के लिए था । भारतवर्ष में तो अंग्रेजों का राज्य था और यहाँ केन्द्र में गर्वनर जनरल और प्रान्तों में गर्वनर का शासन होता था । प्रान्तों में कमिश्नरियाँ और कमिश्नरियों में जिले होते थे । जिला अधिकारी भी अपने को राजा से कम न मानता था । यूँ तो प्रत्येक अंग्रेज ही यह समझता था कि वह भारतवर्ष का शासक है और सभी भारतवासियों को गुलाम समझता था । उस समय भारतवासियों को सभी अंग्रेज गुलाम समझते थे । उस समय भारतवासी, भारतवर्ष के कारीगर और भारतवर्ष के उत्पादनों के साथ अंग्रेजों के द्वारा अन्याय किया जाता था । जहाँ-जहाँ अच्छे कारीगर थे उन्हें सताया जाता था और भारतवर्ष का उत्पादन अच्छे दाम में बिकने नहीं पाता था। इस तरह के अनेकों अत्याचार अंग्रेज शासक कर रहे थे । इसीलिए स्वामी दयानन्द जी ने राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख प्रस्तुत उद्धरण में किया है ।

स्वामी जी के अनुसार राजा में शुभ गुण होना चाहिये । प्रथम तो राजा स्वदेश का ही होना चाहिये। जो भी राज करे उसके गुण, कर्म उत्तम होने चाहिये । राजा को किसी व्यक्ति या वर्ग या किसी सम्प्रदाय का पक्षपात नहीं करना चाहिये । राजा को अपनी प्रजा के साथ पिता की तरह प्रजा को पुत्रवत् मानकर सदा उनकी उन्नति करने का प्रबन्ध करना चाहिए । राजा पिता की तरह प्रजा का सदा शुभ चिन्तन करता रहे ।

'ईशावास्यम्'
पी-३०, कालिन्दी हाऊसिंग स्टेट
कोलकाता-७०००८९
फोन - ०३३-२५२२२६३६
मो० - ९४३२३०१६०२

●

thearyasamaj.org

लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

लेखक – स्वामी सदानन्द सरस्वती
(दयानन्द मठ, दीनानगर)

जन्म - महर्षि दयानन्द १८७६ ईस्वी में पंजाब आए । उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ । नवजागरण की इस शुभ वेला में सरदार भगवान सिंह के घर पौष मास विक्रम संवत् १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहर सिंह ने जन्म लिया । यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ । लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियाँ दी हैं । राष्ट्रवीर लाजपतराय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी एवं साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिब्राजक भी इसी की देन थे । इसी जिले के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इसे गौरवान्वित किया । श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी, भी इसी जिले के हैं ।

परिवार – बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दीघाटी से आकर यहाँ बसे थे । उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था । वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहरसिंह यथा-नाम तथा-गुण बन गये । सरदार भगवान सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिए केहरसिंह का लालन—पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ ।

आर्य समाज का परिचय – लताला में श्री पं० बिशनदास जी उदासी महात्मा से बैद्यक पढ़ते रहे । इन्हीं पण्डित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये ।

गृहत्याग और संन्यास – पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहरसिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये । धर्मशास्त्रों का पठन-पाठन, संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे । आर्य समाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (१९५७ विक्रम) संन्यास लिया ।

विदेशों में – संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे । इसके लिए किसी सभा संस्था से आपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली । स्वदेश लौटे तो पं० बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्य समाज के कार्य में जुट गए । योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्रामसुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया । फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया । आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ ।

पुनः विदेश यात्रा – १९१४ ई० में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिए गये । तीन वर्ष तक आपने वहाँ धर्मोपदेश करते हुए वहाँ के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा । भारत के राष्ट्रीय हितों की वहाँ रक्षा की । राष्ट्रभाषा का प्रचार किया । जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया ।

स्वतन्त्रता संग्राम में – १९१६ ई० में स्वदेश लौट कर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय

thearyasamaj.org

स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े । १९१९ ई० में मार्शल लॉ के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने काँग्रेस को विशेष सहयोग दिया । १९२० ई० में बर्मा गये । वहाँ धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया । माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम खुल्ला प्रचार किया । अंग्रेज सरकार की आँख में आप कांटे की भांति चुभने लगे ।

काल कोठरी में – १९३० ई० में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे तो आपने सत्याग्रह को चलाया । डॉ० मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिए प्रदेश कांग्रेस के प्रधान भी बनाए गये । इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतंत्रता सेनानी पं० नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को आपने जेल भेजा ।

१९३० ई० में लाहौर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने पर आपको बन्दी बना लिया गया । आपकी गतिविधियों के कारण श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली । स्वराज्य संग्राम में केवल आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय (Missionary College) की ही तलाशी ली गई ।

विद्रोह का आरोप – १९४२ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापड़ौदा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहा कि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्रहियों पर गोली मत चलाएं । आपकी हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा । सरकार यह सहन न कर सकी । वायसराय के विशेष आदेश से आपको शाही किला लाहौर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएं दी गईं । किला से छोड़े गए तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानगर में नजरबन्द किए गए । आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए । जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वध का षडयन्त्र करने का भी आरोप लगाया गया ।

क्रांतिकारियों को शरण – आप दस वर्ष श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर आसीन रहे और सैकड़ों योग्य शिष्य आर्य समाज को प्रदान किये जो उनके चरण चिह्नों पर चलते हुए आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं । आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था । तब आपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहौर में शरण दी ।

१९३८ ई० में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना करके इसे मानव केन्द्र बनाया । धर्म प्रचार एवं संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है । सहस्त्रों रोगी प्रतिदिन यहाँ धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं । इस आश्रम में भी देश के स्वतंत्र होने तक कई क्रांतिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर शरण पाते रहे, महात्मा गाँधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी । इस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे ।

नवाबों से टक्कर – आपने मालेरकोटला, लोहारू व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगा कर जन अधिकारों की रक्षा की । आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्य समाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई । महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए । इन संघर्षों से

thearyasamaj.org

स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई ।

लहूलुहान – लुहारू में तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राणघातक प्रहार किये गये । आजन्म ब्रह्मचारी ६५ वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे । आप के सिर पर इन घावों के इक्कीस चिह्न थे । एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दीख जाता था ।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत – प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार के लिए गए । देश स्वतंत्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये । आपने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया । मारीशस की स्वतंत्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया ।

बहुमुखी प्रतिभा – तेजस्वी व्यक्तित्व –

अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया । स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया । पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे । आप कई भाषाओं के विद्वान लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान थे । आप वर्षों आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान रहे ।

महाप्रयाण – Sound mind in a sound body बलवान शरीर में बलवान आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरतः चरितार्थ होती है । भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे । १३-४-१९५५ को बम्बई में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ ।

दयानन्द मठ, दीनानगर

स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सेंटर

बड़े हर्ष का विषय है कि यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन भारत सरकार की ओर से प्रदत्त आर्थिक सहयोग से दोआबा कालेज जालन्धर में 'स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सेंटर' सत्र २०१४-१५ से स्थापित किया गया है । इस सेंटर के माध्यम से स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तथा आम जनता तक पहुँचाने के साथ-साथ शोधकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि भी आयोजित किए जाएंगे । स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य को डिजिटल रूप में इन्टरनेट (www.doabacollege.net) पर उपलब्ध कराने की योजना भी तैयार की गई है। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, आर्य समाजिक संस्थाओं तथा आर्यजनों से निवेदन है कि यदि उनके पास स्वामी दयानन्द का कोई भी ग्रन्थ किसी भी भाषा के किसी भी फॉन्ट (चाणक्य, कृतिदेव, शूषा आदि) में कम्पोज किया हुआ है तो वो हमारे email: dayanandstudy@doabacollege.net पर वह सामग्री भेजने की कृपा करें । हम उस सामग्री को इन्टरनेट के लिए यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित कर कालेज की उपरोक्त वैबसाइट पर अपलोड कर देंगे। आशा है ऋषिवर दयानन्द के इस पुनीत कार्य में आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा ।

-- **डॉ० नरेश कुमार धीमान,** प्राचार्य

thearyasamaj.org

''यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्व''

श्री खुशहाल चन्द्र आर्य

यज्ञोपवीत के तीन धागे, मनुष्य के ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उऋण होने का संकेत करते हैं। यह धागे मनुष्य को याद दिलाते हैं कि तुम्हारे ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उऋण होना तुम्हारा पावन कर्तव्य है, जिसका मनुष्य को पालन करना चाहिए । वे तीन ऋण इस भाँति हैं ।

१– ऋषि ऋण – ऋषि ऋण का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने बड़े परिश्रम और अपना पूरा जीवन स्वाध्याय में लगाकर, ईश्वर—प्रदत्त वेद ज्ञान का गहन अध्ययन करके उनके सही अर्थों के आधार पर उपवेद, उपनिषद्, दर्शन, ब्राह्मण-ग्रन्थ व स्मृतियाँ आदि लिखकर हमको पढ़ने के लिए जो सामग्री दे दी है उसको पढ़कर हम अपने जीवन को उन्नत व पवित्र बनाकर मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं, इस लाभ के लिए जो हमारे ऊपर ऋषि-मुनियों ने उपकार किया है, उस ऋण से उऋण होने के लिए या उनके परिश्रम व स्वाध्याय को सफल बनाने के लिए एक ही मार्ग है, वह है हम उनके लिखे ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करें और अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को उन्नत बनाए; तभी हम उनके ऋण से उऋण हो सकेंगे । जैसे एक पिता अपना पूरा जीवन लगाकर जो धन-संग्रह करता है, वह अपने पुत्रों को दे देता है, तब उन पुत्रों का यह कर्त्तव्य है कि इस धन की वृद्धि करें और परोपकार के कार्यों में लगावे । इसी प्रकार हम भी ऋषि-ऋण से तभी मुक्त होंगे जब हम उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सफल व सुखी बनावें और उन्हीं ग्रन्थों के अनुसार और ग्रन्थ लिखकर आने वाली सन्तानों को और अधिक सामग्री देवें । यज्ञोपवीत का एक धागा इसी ऋण से मुक्त होने का संदेश देता है ।

२ – देव ऋण – यह ऋण दो किस्म का होता है । पाँच जड़, देवता जिनमें पृथ्वी, जल, हवा, अग्नि व आकाश हैं । यह पाँचों देवता हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा, इनको अपने प्रभाव से प्रभावित करके इनको ज्ञान यानी चेतना देकर कार्यों में प्रवृत्त करते हैं । अग्नि हमारी आंखों को रूप देखने की शक्ति देती है । आकाश शब्द के रूप में कानों को सुनने की शक्ति देता है । पृथ्वी गन्ध के रूप में नाक को सूँघने की शक्ति देती है । हवा स्पर्श के रूप में अनुभव करने की शक्ति देती है । इसी प्रकार जिह्वा को रस के रूप में पानी स्वाद लेने का अनुभव करवाता है । इन उपकारों के लिए हम इन जड़ देवताओं को यज्ञ द्वारा सन्तुष्ट व प्रसन्न करते हैं । यहाँ यह लिखना बहुत आवश्यक है कि जिस प्रकार शरीर के सब अंगों को खुराक व शक्ति पहुँचाने के लिए हम मुख से भोजन करते हैं । मुख से किया हुआ भोजन पेट में जाकर उसका खून व रस बनता है । उस खून व रस को हमारी शरीर की नसें (धमनियाँ) पूरे शरीर में जाकर प्रत्येक अंग को शक्ति देती हैं । इसी से उनमें कार्य करने की क्षमता आती है । इसी प्रकार अग्नि सब जड़ देवताओं का मुख है । यज्ञ द्वारा दिया हुआ घी तथा सामग्री अग्नि में जल कर उसकी सुगन्ध हजार गुणा तेज होकर प्रकृति के बाकी चारों देवताओं के पास पहुँचा देती है यानी पूरी प्रकृति में जो प्राणियों द्वारा किये गये श्वांस, मल, पेशाब

thearyasamaj.org

व पसीना आदि से जो दुर्गन्ध होती है वह यज्ञ द्वारा सुगन्धित हो जाती है और पूरा वातावरण सुगन्धित व पवित्र हो जाता है । इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह जितना वातावरण अपने शरीर से बाहर आने वाली वस्तुओं से गन्दा करते हैं, उतना ही वातावरण को यज्ञ द्वारा सुगन्धित करे जिससे पूरा वातावरण सदैव ही पवित्र बना रहे । इसीलिए वेद भी 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है । साथ ही 'स्वर्गकामो यजेत' स्वर्ग की कामना करने वालों को यज्ञ करना चाहिए। दूसरा देव है, देवों का देव महादेव यानी ईश्वर है । ईश्वर ने प्राणी-मात्र पर विशेषकर मनुष्य के ऊपर बड़े उपकार किये हैं । ईश्वर ने मनुष्य के लिए सुन्दर सृष्टि की रचना करके मनुष्य के उपभोग, सहयोग व उपयोग के लिए जल, वायु अग्नि, फल-फूल, पशु-पक्षी आदि निःशुल्क देकर बड़ा उपकार किया है । इन्हीं के सहयोग से मनुष्य अपने जीवन को सुन्दर ढंग से चलाते हुए अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी बनाते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है ।

ईश्वर के इस निःस्वार्थ उपकार के लिए हम सन्ध्या करते हैं । सन्ध्या में हम ईश्वर के गुणों का गुण-गान करते हैं और उसके गुण दया, करुणा, परोपकार, सहृदयता, सहयोग आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करते हैं जिससे हमारा जीवन उत्तम और श्रेष्ठ बनता है और हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं । इन उपकारों के ऋण से हम सन्ध्या द्वारा उऋण होते हैं । इसीलिए दिन में दो बार प्रातः व सायं सन्ध्या करना हमारे ऋषि-मुनियों ने बताया है जिसे सब मनुष्यों को करना चाहिए ।

३ – पितृ ऋण – माता-पिता तथा वृद्ध जनों के हमारे ऊपर बहुत उपकार होते हैं । माता हमको नौ महीने पेट में रखती है, फिर बालकपन में हमारा पालन करती है । हमें चलना बोलना सिखाती है। पिता अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाता है, फिर उसका विवाह करके कमाने के योग्य बनाता है और अपना कमाया हुआ धन बच्चों को दे देता है । वृद्ध जनों का अनुभव और उनका आशीर्वाद हमारा बहुत सहयोगी बनता है । इस प्रकार माता-पिता व वृद्ध जनों का उपकार हमारे पूरे जीवन को सुखी व समृद्धशाली बनाने में अति सहयोगी रहता है, इसलिए हमें उनकी सेवा व सुश्रूषा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए जिससे हम उनके ऋण से कुछ अंशों में उऋण हो सकें । इस प्रकार यज्ञोपवीत का तीसरा धागा हमें माता-पिता एवं वृद्धजनों की सेवा व सुश्रूषा करने का आदेश देता है । हमें यहाँ यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि सेवा और सुश्रूषा क्या होती है । सेवा को तो सभी जानते हैं । माता-पिता की खाने-पीने, रहने-सहने आदि की सुन्दर व्यवस्था करना, उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए उनकी आज्ञा का पालन करना सेवा कहलाती है सुश्रूषा का तात्पर्य है उनकी बात को आदर पूर्वक सुनना यानी उनकी बातों या उनकी इच्छाओं की अवहेलना न करना । उनसे हर काम पूछ कर करना और उनके महत्व को बनाए रखना उनकी सुश्रूषा करना है । आज कल माता-पिता व वृद्ध जनों की सेवा तो कुछ अंश में हो जाती है । परन्तु सुश्रूषा का अभाव बना रहता है । इसलिए सुश्रूषा यह भी बच्चों को पूरा ध्यान रखना चाहिए।

एक बात यह भी जानने योग्य है कि हमारे पौराणिक भाई छः धागों की यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं । उनका मानना है कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत नहीं पहनना चाहिए कारण ये चार दिन अपवित्र रहती हैं । परन्तु यह स्वार्थी पण्डितों का डाला हुआ अन्धविश्वास है, कारण अपवित्र तो मनुष्य भी नित्य कर्म

thearyasamaj.org
करते वक्त रहता है इसलिए जब पुरुष जनेऊ पहनता है तो स्त्रियाँ भी जनेऊ पहनें तो कोई आपत्ति नहीं। स्त्रियों को यज्ञोपवीत न पहनने देना यानी उनको तीनों ऋणों से वंचित रखना, यह नारी जाति के ऊपर अन्याय करना है। क्या स्त्रियाँ अपने माता-पिता, सास-श्वसुर की सेवा व सुश्रूषा नहीं कर सकतीं। इतना ही क्यों मध्यकाल में तो इन स्वार्थी पण्डितों ने तो स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार भी छीन लिया था। यह तो देव दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार दिलाया। इसीलिए, ऋषि ने आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम यह भी बताया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (सज्जन व श्रेष्ठ पुरुषों व स्त्रियों) का परम धर्म हैं। अब हमें यह अन्धविश्वास कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण नहीं करना चाहिए, इसे हटा देना चाहिए ताकि, स्त्रियाँ भी यज्ञोपवीत धारण करके तीनों ऋणों का पालन कर सकें जो ऋषि के बताने से वेदानुकूल है।

C/o - गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड, २ तल्ला
कोलकाता-७००००७
मो० : ९८३०१३५७९४

योग-ध्यान–साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक ११ से १९ अप्रैल-२०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। डॉ० सुरेश जी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० ०९४१९१०७७८८, ०९४१९७९६९४९ अथवा ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

भारत भूषण आनन्द
आश्रम प्रधान

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में भूमिकाओं की आत्मिक झलक

पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'

महाभारत काल के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी पहले लेखक थे, जिन्होंने प्राचीन ऋषियों की शैली में प्रश्नोत्तर में अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा है ।

सत्यार्थ प्रकाश में दसवें सम्मुलास से होना चाहिए भूमिका की पृष्ठभूमि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं की संपूर्ण ग्रन्थ में अपने आत्मीय विचारों का निचोड़ दिया है और हजारों आर्ष ग्रन्थों का प्रमाण दिये हैं । प्रत्येक धर्मशील, कर्मशील, धर्म प्रचारक व आर्य को सत्यार्थ प्रकाश के पठन से पूर्व भूमिकाओं का अवश्य स्वाध्याय करना चाहिए । मैंने प्रत्येक भूमिका में वर्णित महर्षि दयानन्द जी के आत्मीय चिन्तन का संक्षिप्त उल्लेख किया है ।

महर्षि भूमिका में लिखते हैं, मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है । वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान सत्य का प्रकाश किया जाये । किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है । इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता । इसीलिये विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्या-सत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें ।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य से झुक जाता है । परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो । सत्या-सत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है ।

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर स्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो सबके अनुकूल उनका ग्रहण जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्ताएं तो जगत का पूर्ण हित होवे । क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है । इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है ।

thearyasamaj.org

इनमें जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में घर प्रवृत्त होता है, उसे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं । परन्तु **सत्यमेवल जयति नानृतं सत्येन पन्थादेवयानः** अर्थात् जो सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है । इस दृढ़ निश्चय के अवलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते ।

नं० १ - अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में पुराणादिग्रन्थों के गुण दोष पृष्ठभूमि – जब तक मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा, तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा । यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़कर सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना-कराना चाहे, तो हमारे लिये ये बात असाध्य नहीं हैं ।

यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सबको जाल में फँसा रखा है । यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फँस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना हैं तो अभी ऐक्यमत हो जायें । इसके होने की युक्ति इसकी पूर्ति में लिखेंगे । सर्व शक्तिमान परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें ।

नं० २ - अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में बौद्ध जैनियों के मत विषयक पृष्ठभूमि –

जब विद्वान् लोगों में सत्याऽसत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है । इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है । यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो ।

और यह बौद्ध जैन मत का विषय बिना इनके अन्य मत वालों को अपूर्व लाभ और बोध कराने वाला होगा, क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्य मत वाले को देखने, पढ़ने वा लिखने को नहीं देते। बड़े परिश्रम से मेरे और विशेष आर्य समाज मुम्बई के मंत्री 'सेठ सेवकलाल कृष्णदास' के पुरुषार्थ से ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं । तथा काशीस्थ 'जैन प्रभाकर' यन्त्रालय से छपने और मुम्बई में 'प्रकरणरत्नाकर' ग्रन्थ के छपने से भी सब लोगों को जैनियों का मत देखना सहज हुआ है ।

भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न दिखलाना ! इसी से विदित होता है कि इन ग्रन्थों के बनाने वालों को प्रथम ही शंका थी कि इन ग्रन्थों में असम्भव बाते हैं, जो दूसरे मत वाले देखेंगे तो खण्डन करेंगे और हमारे मत वाले दूसरों का ग्रन्थ देखेंगे तो इस मत में श्रद्धा नहीं रहेगी । अस्तु जो हो, परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते, किन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्युक्त रहते हैं । यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दूसरों के दोषों में दृष्टि देके निकालें !

नं० ३ - अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में ईसाई मत विषयक पृष्ठभूमि –

सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मतविषयक पुस्तकों को देख समझ कर कुछ सम्मति व असम्मति देवें वा लिखें, नहीं तो सुना करें । क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है, वैसे सुनने से बहुश्रुत

thearyasamaj.org

होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके तथापि आप स्वयं तो समझ ही जाता है । जो कोई पक्षपात यानारूढ़ होके देखते हैं, उनको न अपने और न पराये गुण, दोष विदित हो सकते हैं । **मनुष्य का आत्मा यथा योग्य सत्याऽसत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है । जितना अपना पठित व श्रुत है, उतना निश्चय कर सकता है ।** यदि एक मत वाले दूसरे मतवाले के विषयों को जानें और अन्य न जानें तो यथावत् संवाद नहीं हो सकता, किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाड़े में गिर जाते हैं । ऐसा न हो इसलिये इस ग्रन्थ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा-थोड़ा लिखा है । इतने ही से शेष विषयों में अनुमान कर सकता है, वे सच्चे हैं कि झूठे ? जो-जो सर्वमान्य सत्य विषय हैं, वे तो सब में एक से हैं । झगड़ा झूठे विषयों में होता है । अथवा एक सच्चा और दूसरा झूठा हो तो भी कुछ थोड़ा-सा विवाद चलता है। यदि वादी प्रतिवादी सत्याऽसत्य निश्चय के लिये वाद प्रतिवाद करें तो अवश्य निश्चय हो जाये।

नं० ४ - अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में मुसलमानों के मत विषय की पृष्ठभूमि –

सब मतों के विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें । न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ-मूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है । किन्तु जो-जो भलाई है, वही भलाई और जो बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे । न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो वह न माने वा माने । किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता ।

और यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें । और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करे करावें, क्योंकि पक्षपात से क्या-क्या अनर्थ जगत् में न हुए और न होते हैं । सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्यों को रखना मनुष्यपन से वहिः है ।

इसमें जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो उसको सज्जन लोग विदित कर देंगे, पश्चात् जो उचित होगा तो माना जायेगा, क्योंकि यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध घटाने के लिये किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ । क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक रह परस्पर को लाभ पहुँचाना हमारा मुख्य कर्म हैं ।

लेखक — यह मैंने प्रयास करके सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं से कुछ अंश लिखे हैं, ताकि पाठकों को भूमिकाएं पढ़ने में रुचि बढ़ जाये और अनार्ष ग्रन्थों की सत्यता प्रतीत हो ।

वैदिक प्रचारक
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून
उत्तराखण्ड
मो० ९४११५१२०१९

thearyasamaj.org

"मानव की ऐषणाएं"

– श्री कामता प्रसाद मिश्र

मानव की प्रवृत्ति है कि वह पुत्र, संतान, धन सम्पत्ति, वैभव द्वारा समाज में अपना प्रभुत्व, कीर्ति तथा प्रभाव के बल पर शक्तिशाली, बलशाली तथा धनबली बन कर उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता है । अतः प्रत्येक मानव में विकैषणा, पुत्रैषणा तथा लोकेषणा की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है जिसकी व्याख्या निम्नांकित है । उक्त ऐषणाएं सदैव मानव को प्रभावित करती रही हैं ।

वित्तैषणा –

वित्तो भोग प्रत्ययः (अष्टा ८.२.५८) । वित्त धन को कहते हैं । इस प्रकार भोग तथा भोग के साधनों की इच्छा वित्तैषणा कहलाती है । विश्व के समस्त भोगों का आधार धन ही है । धन के सर्वथा अभाव में जीवन जीना भी असंभव है । एक लोकश्रुति है **"वुभुक्षित: किं न करोति पापम् ।"** अर्थात् भूखा व्यक्ति कौन-सा पाप नहीं करता । परन्तु हम समाज पर दृष्टि डालें तो भरा पेट अर्थात् धनी ऐश्वर्यशाली व्यक्ति जितना पाप करता है उतना भूखा अर्थात् धनहीन गरीब व्यक्ति नहीं कर सकता। यथार्थ में तो व्यक्ति भोग के लिए ही पाप करता है । भोग के लिए वह न्याय-अन्याय का उचित-अनुचित का त्याग कर क्रूर स्वार्थी बन कर तृप्ति पाना चाहता है । यही वित्तैषणा है ।

आज के भौतिकवादी युग में धनी, वैभवशाली तथा ऐश्वर्यशाली बनने की होड़ लगी हुई है । जिसे वे तथा उनकी संतान अपने जीवन में पूरा-पूरा भोग भी नहीं कर सकते । परन्तु यह अति संग्रह की प्रवृत्ति क्या विश्व के मानवों में सुख-शान्ति स्थापित कर सकती है ? वैदिककाल में वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था का नियमानुसार पालन होता था तथा धन संग्रह तथा अभाव की पूर्ति करना वैश्य का कार्य होता था । आज सभी वर्णों में धन संग्रह की प्रवृत्ति प्रबल है परन्तु अभाव की पूर्ति की प्रवृत्ति अति न्यून हो गई है । अर्थात् मानवीय मूल्यों का ह्रास तेजी से हो रहा है । एक भाई पूर्ण सम्पन्नता का जीवन जी रहा है तो दूसरा विपन्नता तथा अभाव का । ऐसे धन संग्रह का कोई मूल्य नहीं है । आज का संन्यासी भी धन-संग्रह में लिप्त है, बड़े-बड़े मठ, आश्रम आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं । जहाँ संन्यासी त्याग की मूर्ति होता था, समाज में जाकर प्रवचन करता था, जिसमें चरित्र निर्माण, अध्यात्म चिन्तन और परोपकार आदर्श सिद्धान्त विषय सम्मिलित होते थे ।

आज का संन्यासी विद्वान् नहीं, केवल गेरुआ वस्त्र धारण कर संन्यासी बन जाते हैं, वह समांज का क्या हित कर सकते हैं ? परन्तु उनमें अयोग्यता होते हुए भी पाखण्ड, आडम्बर तथा अंधविश्वास के द्वारा लोगों को प्रभावित कर, ठग कर धन संग्रह की प्रवृत्ति प्रबल है, ऐसे लोग करोड़ों के मालिक बने बैठे हैं । इन जैसे लोगों से समाज सुधार या मानवीय मूल्यों की रक्षा से कोई सरोकार नहीं । ऐसे संन्यासियों को नकार देना चाहिए जो संन्यास आश्रम के सिद्धान्तों तथा मान्यताओं का पालन नहीं करते।

thearyasamaj.org

केवल ढोंग रचकर संन्यासी मर्यादा का अपमान कर रहे हैं ।

योग दर्शन में कहा है — अहिंसा सत्याऽतेय ब्रह्मचर्यऽपरिग्रहा यमः ।।२।३०। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह पाँच यम हैं । यहाँ पर हम अपरिग्रह को लेते हैं जिसका अर्थ है — भोग साधनों के संग्रह के लोभ से मुक्त होना अपरिग्रह है । धन कमाना तथा अर्जित करना इसका निषेध वेद में नहीं है । धन का उचित उपयोग मान्य है । धन के संग्रह करने, रखने और खाये जाने, धन की इन तीन अवस्थाओं को दुःखजनक समझ उससे अधिक जिससे जीवन यात्रा पूरी हो सके, धन की इच्छा न करना ही अपरिग्रह कहा जाता है । धन संग्रह तथा विषय भोग से कभी भी पूर्ण तृप्ति नहीं होती। कठोपनिषद में कहा है — न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः । मनुष्य सम्पत्ति, ऐश्वर्य तथा अखिल विश्व के वैभव का स्वामी बनकर भी पूर्ण तृप्त नहीं होता क्योंकि ये सब सुखशान्ति नहीं दे सकते । इसीलिए वेद भी कहता है — तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधा कस्यस्विद्धमम् । यजु० । परमात्मा द्वारा उपहार में प्राप्त सृष्टि के पदार्थों को त्याग भाव से भोग करो, लालच मत करो, यह सम्पूर्ण धन परमात्मा का है अन्य किसी का नहीं ।

पुत्रैषणा – जिस प्रकार मानव के जीवन में वित्तैषणा बाधक होती है । उसी प्रकार पुत्रैषणा भी बाधक है । पुत्रैषणा का सामान्य अर्थ होता है संतान की इच्छा । भावी जीवन को सुरक्षित एवं सुनिश्चित बनाने की योजना । मैं इसका उपकार करूँगा तो भविष्य में मेरी यह सेवा करेगा । व्यापक रूप से सोचा जाय तो पत्नी, पुत्र तथा सेवकादि पुत्रैषणा के ही रूप है । आध्यात्मिक क्षेत्र में यही शिष्यैषणा के रूप में प्रचलित देखा जाता है । वर्तमान युग में शिष्य परम्परा के द्वारा अनेक मठाधीशों ने तो एक पारम्परिक उत्तराधिकारी की आधारशिला ही बना लिया है । धन को भोगने के लिए उसकी समृद्धि के साथ-साथ सहायकों तथा रक्षकों का होना अनिवार्य है । कोई भी मनुष्य अपने लिए भोगने योग्य कुछ पदार्थों का उत्पादन, संग्रह परिक्षय इतनी मात्रा में कर सकता है कि जो उसके लिए आवश्यकता से अधिक हो सकती है । किन्तु भोग भावनानुसार इतने पदार्थों की कामना होती है जिसे वह स्वयं जुटाने में समर्थ नहीं होता, उसके लिए सहायक आवश्यक होता है ।

धन के अत्यन्त अभाव में कोई योगी भी अपना जीवन यापन नहीं कर सकता परन्तु पुत्र के अभाव में मोक्ष प्राप्ति या जीवन यापन असम्भव हो जाय ऐसी बात नहीं है । उसके अभाव में भी दोनों कार्य सिद्ध हो सकते हैं । यह कह सकते हैं कि पुत्र तो धन से भी कम महत्व वाला है । जो पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय, परोपकारी तथा विषय भोग कामना से रहित पुरुष के लिए विवाह करना बहुत बड़ी भूल है। किन्तु विषय भोग किए बिना निर्वाह न हो सके तो पतित होने की अपेक्षा अच्छा है कि विवाह कर ले। किन्तु अन्त में उसे भी आना यहीं पड़ेगा ऐसा सोचकर ज्ञानार्जन करना होगा । क्योंकि बिना ज्ञान के मुक्ति असंभव है । ज्ञानान्मुक्ति । सांख्य अ० ३।सूत्र २३। ज्ञान से ही मुक्ति होती है ।

व्यक्ति यह सोचता है कि जिस कार्य को मैं नहीं कर सका, जिन ऐश्वर्यों से वंचित रहा उसकी

thearyasamaj.org

पूर्ति मेरी संतान करेगी तब मैं धन्य-धन्य हो जाऊँगा । पीढ़ियाँ चलती रहेंगी मैं अमर हो जाऊँगा । परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि ऐसा हो ही जायेगा । महापुरुष श्री रामचन्द्र तथा पितृभक्त श्रवण कुमार जैसे आदर्श पितृभक्तों के माता-पिता तड़प-तड़प कर जीवन त्याग कर संसार से विदा हो गए । नन्द तथा माता यशोदा को छोड़कर निर्मोही श्रीकृष्ण जंगल प्रस्थान कर गये । ऐसी-ऐसी लोकश्रुति प्रचलित हैं तो किसके ऊपर विश्वास किया जाय । आज भी कहने को तो तीन तथा चार पुत्र हैं, ऐश्वर्य सम्पन्न हैं परन्तु अन्दर की सिसकन वह नहीं रोक पाते । पिता बिना भोजन, बिना पानी के मर रहे हैं और पुत्र आनन्द का जीवन जी रहे हैं । आज के युग में पुत्र कितने कृतज्ञ हैं यह किसी से छिपा नहीं हैं । परन्तु यह प्रत्येक पिता या पुत्र पर लागू नहीं होता, अपवाद तो होते ही है । इतिहास गवाह है कि सत्ता प्राप्त करने के लिए कंस ने अपने पिता उग्रसेन को कारागार में डाल दिया, औरंगजेब अपने पिता शाहजहाँ को कारागार में डाल कर सत्ता हथिया कर सम्राट बन बैठा । आप अपने पास पड़ोस में देखें तो इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिल जायेंगे । स्त्रियों में भी मंथरा तथा कैकेई कोई अकेली स्त्री नहीं हुई है । विवेक पूर्वक व्यक्ति को इन सब बातों को सूक्ष्मता से विचारते हुए आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होना चाहिए । आज की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा स्वकल्याण की भावना प्रबल है । जब तक व्यक्ति चरित्रवान, धार्मिक, आदर्शवादी तथा वेद-विद्यानुरागी नहीं होगा तब तक देश, समाज तथा राष्ट्र का कल्याण नहीं होगा । अतः वेद मार्ग ही सबको सद्मार्ग का प्रकाश देगा ।

लोकैषणा – लोकैषणा का प्रचलित सामान्य अर्थ है यश, ख्याति, कीर्ति, मान-सम्मान, माला और मूर्ति स्थापना की चाह जो लाखों वर्षों तक विद्यमान रहे । जैसा कि आजकल हमारे नेताओं में यह अधिक प्रचलित है । नेता लोग अपने जीवन में अपनी मूर्ति लगवाने लगे हैं ।

लोकैषणा ग्रस्त व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण क्रियायें इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि जिससे उसको सम्मान मिले, उसकी चारों ओर प्रशंसा की जाय । आज के कथित समाज सुधारक तथा राजनेता मंच से खुली घोषणा करते हैं कि मैं आपके लिए त्याग कर रहा हूँ मुझे एक बार अवसर दें, मैं आपके लिए प्राण न्योछावर कर दूँगा । देश और समाज की उन्नति करना, कल्याण करना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है । परन्तु अवसर मिलने पर लूट और लूट ही परम उद्देश्य होता है जिसके बल पर समाज में अपना मान सम्मान स्थापित करते हैं । लोकैषणा ऐसी विचित्र है कि लोग सोचते हैं कि जिस प्रकार आज मेरी प्रशंसा हो रही है, पूजा हो रही है, माला पहनाया जा रहा है, मूर्ति लग रही है, इस प्रशंसा तथा सम्मान से जो सुख प्राप्त हो रहा है वह मरणोपरान्त भी मिलता रहेगा ।

प्रत्येक कार्य को व्यक्ति लोकैषणा पूर्ति का साधन बनाता जा रहा है । दान, परोपकार तथा धार्मिक कार्यों से भी लोकैषणा की पूर्ति की जा सकती है परन्तु छल-कपट, अन्याय, भय, दबाव, हिंसा, लोभ आदि द्वारा लोकैषणा पूर्ति की जा रही है । धर्मपूर्वक जो लोकैषणा की पूर्ति की जाती है लौकिक दृष्टि से वह कुछ ठीक है परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में उसका निषेध है क्योंकि इसे त्यागकर व्यक्ति अहंकारादि

thearyasamaj.org

दोषों से छूट सकता है । इस समय बहुत ऐसे लोग हैं जो भारतीय संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति और वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों को और उसकी मर्यादा की रक्षा हेतु बड़े-बड़े लच्छेदार प्रभावपूर्ण शैली में जनता को सम्बोधित करते हैं । वैदिक सिद्धान्त, ज्ञान-विज्ञान तथा दर्शन से शून्य व्यक्ति गेरुआ वस्त्रों को धारण कर, जगत्गुरु की उपाधि से अलंकृत होने को प्रयत्नशील है ।

वैदिक धर्म में सम्पूर्ण मनुष्यों में सबसे अधिक सम्मान का अधिकारी या तो विद्वान् सत्यवादी संन्यासी होता है या वह जो अपना जीवन वैदिक धर्म तथा ज्ञान विज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना सर्वस्व त्याग कर समाज का हित करता है । वे संन्यासी जो महान विद्वान हैं तथा तन-मन-धन बाल बच्चों का परित्याग कर लोक सेवा में समर्पित हैं तथा इसी श्रेणी के विद्वान जो लोकसेवा में समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं उनको सम्मान मिलना चाहिए ।

अविवेक पूर्ण कामनाएँ ऐषणाएँ कहलाती हैं । अविवेकी पुरूष इन ऐषणाओं से दुःख भोगते हैं। मानव जीवन जब तक ऐषणाओं से ग्रस्त रहेगा सदैव दुःखी रहेगा । मानव जीवन का परम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है तथा मोक्ष प्राप्त करना है । यहाँ यह कहते हुए हमें गर्व होता है कि महर्षि दयानन्द वित्तैषणा, पुत्रैषणा तथा लोकैषणा से एकदम अछूते दिव्य महापुरुष थे । उन्होंने किसी प्रकार अपना अलग मत न चला कर वैदिक धर्म के विचारों तथा मान्यताओं का ससम्मान प्रचार-प्रसार किया ।

२४७५, निराला नगर 'शिवपुरी'
सुलतानपुर (उ०प्र०)

शांतिवन आश्रम (टांगरपाली) में युवा चरित्र-निर्माण शिविर सम्पन्न

पश्चिम ओडिशा में आर्ष पाठविधि का निःशुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित शांतिवन आश्रम टांगरपाली में युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल शिविर उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ । इस शिविर में २५ से ३० दिसम्बर तक योग्य शिक्षकों द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये ।

समापन समारोह पर गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, श्री अशोक मेहेर, श्री विभूति साहू, श्री कृपा साहू, श्री तपोधन प्रधान तथा अन्य अतिथिगणों की उपस्थिति थी । कार्यक्रमोपरान्त स्वामी व्रतानन्द के द्वारा गरीबों को कम्बल वितरण किया गया । अन्त में शांतिवन आश्रम के आचार्य स्वामी नारदानन्द जी द्वारा आर्यवीरों तथा अतिथि महानुभावों को शुभकामना देते हुए शांतिपाठ पूर्वक इस शिविर का समापन हुआ ।

– डॉ॰ कुञ्जदेव मनीषा
गुरुकुल आश्रम आमसेना

thearyasamaj.org

चाणक्य-नीति में वर्णित भगवान् राम की महिमा

–प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

हमारे दो सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक महापुरुष हैं, राम और कृष्ण, जो हमारे धर्म के सुदृढ़ स्तम्भ हैं और हमारी संस्कृति की आधारशिला । दोनों अपने-अपने गुणों के कारण इतने विख्यात हैं कि पूरा नाम भी लेने की आवश्यकता नहीं है, उनकी अपनी विशेषतायें ही उनकी पहचान है, उनका नाम है और उनका परिचय है । मर्यादा पुरुषोत्तम कहना ही पर्याप्त है, सुनने वाले तुरंत समझ जायेंगे कि भगवान् राम का उल्लेख किया जा रहा है । योगेश्वर कहने मात्र से श्रीकृष्ण का बोध हो जाता है । श्रीकृष्ण को तो इतिहास और परम्परा ने इतना सम्मान दिया है कि समस्त विश्व में इतना सम्मान आज तक किसी अन्य महापुरुष को नहीं मिला । जैसे यदि हम किसी महापुरुष के जन्मदिन अर्थात् जयन्ती का जिक्र करते हैं तो उस-उस महापुरुष का नाम साथ में लगाना आवश्यक होता हैं, यथा — रामनवमी, सीताष्टमी, हनुमान जयंती, बुद्ध जयन्ती, महावीर जयन्ती, दयानन्द जयन्ती आदि । किन्तु श्रीकृष्ण के संदर्भ में नाम साथ में जोड़ना आवश्यक नहीं है, मात्र जन्माष्टमी कह दीजिये, पर्याप्त है, बच्चे भी समझ जायेंगे कि जन्माष्टमी अर्थात् कृष्ण जन्माष्टमी । सारा विश्व जानता है कि जन्माष्टमी अर्थात् श्रीकृष्ण का जन्म दिन । दुनिया के किसी अन्य देश को यह सौभाग्य नहीं मिला कि उसके किसी महापुरुष का जन्मदिन बिना उस महापुरुष का नाम लिये ही लोग समझ जाते हों । यह सौभाग्य तो विश्व-इतिहास ने सुरक्षित और आरक्षित रख छोड़ा है भारत के लिये और भारत के यशस्वी सपूत श्रीकृष्ण के लिये ।

तो हम चर्चा कर रहे थे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र की, चाणक्य के राम की । राम और श्रीकृष्ण पर विश्व की अनेक भाषाओं में विपुल साहित्य मिलता है, चाहे उनकी प्रशंसा में हो, चाहे विरोधियों के द्वारा की गई आलोचना रूप में हो । श्री रामचंद्र का विशद जीवन इतिहास जहाँ वाल्मीकीय एवं तुलसीकृत रामायण (रामचरित मानस) में मिलता है वहाँ अन्यतः भी उनका वर्णन विस्तारपूर्वक अथवा संक्षेपतया उपलब्ध. है । उनका व्यक्तित्व अनेक उत्कृष्ट गुणों का आगार है । वे सत्यसंध हैं, न्यायकारी हैं, विग्रहवान् धर्म हैं, एक की संख्या उनकी अपनी विशेषता है, अर्थात् जो बोलना होता है एक ही बार में बोल देते हैं, बोले हुये पर अडिग रहते हैं, प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने वचन को निभाने का अपूर्व साहस रखते हैं, इसी को लक्ष्य करके तुलसी ने कहा —

रघुकुल रीति सदा चलि आई
प्राण जायें पर वचन न जाई ।

इसी को महाकवि वाल्मीकि ने यूं कहा —

thearyasamaj.org

रामो दिर्नाभिभाषते

अर्थात् राम दोगली बात नहीं करते, कही हुई बात को पूरा करते हैं । बार-बार बात बदलना, कही हुई बात पर न टिकना, सफाई में यह कहना कि मेरा आशय यह नहीं था, मेरे वक्तव्य को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है, संदर्भ को ठीक से नहीं समझा गया, आदि-आदि ये सब व्यर्थ का प्रलाप तो उन्होंने वर्तमान समय के गिरगिटिये, बेपैंदी के लोटा-टाईप नेताओं के लिये छोड़ दिया था, जो जुगाड़ की आड़ में अपना गिरगिट धर्म बड़ी मुस्तैदी से निभा रहे हैं । भगवान् राम और एक दोनों लगभग पर्यायवाची हैं । एक पत्नीव्रत, किसी को दान दिया तो एक बार में ही इतना दे दिया कि फिर उस दानार्थी को माँगने की ही आवश्यकता नहीं पड़ी, एक ही बार के संधान में लक्ष्य को भेद दिया, दुबारा संधान लगाने की नौबत ही नहीं आई । इस प्रकार उनके अनेक अन्यतम चारित्रिक गुणों का उल्लेख यत्रतत्र मिलता है ।

आचार्य चाणक्य ने भी अपनी चाणक्य नीति में दो श्लोकों में भगवान् राम की महिमा का गायन किया है । उन्होंने भी उन्हीं विशेषताओं की ओर इंगित किया है जो अन्य इतिहास एवं काव्य-ग्रन्थों में मिलती है । एक श्लोक में वे कहते हैं —

धर्म्मे तत्परता मुखे मधुरता दाने समुत्साहता,
मित्रेऽवञ्चकता गुरौ विनयता चित्तेऽतिगंभीरता,
आचारेशुचिता गुणे रसिकता शास्त्रेषु विज्ञानतां
रूपे सुन्दरता शिवेभजनता त्वय्यस्ति भो राघव । —चाणक्यनीति (अध्याय-१२ श्लोक १५)

अर्थात् हे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र ! आप में ये गुण प्रमुख रूप में विद्यमान हैं — धर्म-कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते हैं, आपकी वाणी में माधुर्य है, दान उत्साहपूर्वक देते हैं, मित्रों के साथ कभी विश्वासघात नहीं करते, गुरुजनों के प्रति आप में विनयशीलता है, चित्त का गांभीर्य आपके पास है, आपका आचरण अत्यंत शुचि एवं स्वच्छ है, आप में गुण ग्राहकता है, आपका शास्त्र ज्ञान अगाध है, आप सौन्दर्य के धनी हैं और ईश्वर भक्त हैं। यदि गणना करें तो हम पायेंगे कि आचार्य ने ११ (ग्यारह) गुणों का उल्लेख किया है और यह भी द्रष्टव्य है कि आचार्य चाणक्य ने इस श्लोक में महाराज राम को आदर्श महापुरूष के रूप में चित्रित किया है न कि ईश्वर के अवतार रूप में । उपर्युक्त सभी गुणों का एक या दो उदाहरण भी प्रति गुण दें तो बहुत अधिक विस्तार हो जायेगा । एक तो जो अन्तिम गुण बताया — शिवभक्ति अर्थात् ईश्वर भक्ति — उस पर विचार करना आवश्यक है । शिव परमपिता परमेश्वर का ही गौणिक नाम है जो शिवु कल्याणे धातु से बना है । चूंकि परमात्मा सदा सर्वदा सबका कल्याण करता है, भला करता है, कभी किसी का अहित नहीं करता, अतः वह शिव है । हमने शिव को कैलाशवासी, जटाधारी, शरीर पर भस्म रमाने वाला, त्रिशूलधारी, बैल जिसका वाहन है, ऐसा मान लिया जो कि नितांत भ्रामक एवं वेद विरुद्ध धारणा है । ईश्वर भक्त

thearyasamaj.org

कहकर आचार्य ने इस पौराणिक मान्यता का स्पष्ट खण्डन कर दिया कि राम स्वयं ईश्वर थे या ईश्वर के अवतार थे । वैसे भी वाल्मीकीय रामायण में राम को कहीं भी ईश्वर का अवतार नहीं कहा गया, एक आदर्श उच्चकोटि का महापुरुष — महात्मा कहा गया है । उनको एक धर्मपरायण महापुरुष कहा गया है । धर्म से तात्पर्य धर्म के बाह्योपचारों से नहीं है, अपितु उन लक्षणों से है जो महर्षि मनु ने अपनी मनुस्मृति में बताये हैं —

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

ये दसों लक्षण महाराज राम पर पूरी तरह घटित होते हैं, अतः यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि 'रामो विग्रहवान्धर्मः' - राम धर्म की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे । क्या इनमें से कोई एक लक्षण भी हमारे जीवन में है । फिर कैसे हम धार्मिक अथवा राम के अनुयायी कहला सकते हैं । हमारी अधोगति के अनेकों अन्य कारण भी हो सकते हैं, लेकिन एक प्रमुख कारण यह भी हैं कि हमने राम, कृष्णादि महापुरुषों को माना, पर उनकी नहीं मानी। इस 'को' और 'की' के बीच का अंतर ही हमारे पतन का प्रमुख कारण है । हमने अपने महापुरुषों के गुणों की सूची का मात्र पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण वाचनादि तो किया पर उनके गुणों को जीवन में ग्रहण करके तदनुसार आचरण कभी नहीं किया, उनका अनुकरण कभी नहीं किया, और इसी भूल या उपेक्षा का परिणाम था हमारा पतन, हमारी पराधीनता ।

इससे अगले श्लोक में भी आचार्य चाणक्य ने परोक्षतः इन्हीं गुणों का उल्लेख किया है किंतु किया है आलंकारिक शैली में । आचार्य चाणक्य राम की दानशीलता, दूसरों को सुख पहुंचाने की भावना, उज्जवल चरित्र, गांभीर्य आदि की उपमा तो देना चाहते हैं, पर किससे उपमित करें, उचित और उपयुक्त उपमान तो नहीं मिलते । वर्ण्य विषय तो लगभग वे ही गुण हैं जो पहले वाले श्लोक में हैं, पर वर्णन शैली अलग है । देखें आचार्य क्या कहते हैं —

काष्ठं कल्पतरुः सुमेरु रचलश्चिन्तामणिः प्रस्तरः
सूर्यस्तीव्रकरः शशी क्षयकरः क्षारो हि वारान्निधिः ।
कामो नष्टतनुर्बलिर्दितिसुतो नित्यं पशुः कामगौः
नैतांस्ते तुलयामि भो रघुपते ! कस्योपमा दीयते ॥ चा०नी० १२-१६

अर्थात् दानशीलता के लिये कल्पतरु कैसे कहूँ वह तो काष्ठ है, धनैश्वर्य, श्री सम्पत्ति के लिये सुमेरु कैसे कहूँ वह तो पर्वत है, चिन्तामणि भी तो पत्थर ही है, सूर्य आपकी तेजस्विता का उपमान नहीं बन सकता वह तो तपाता है, चन्द्रमा शीतलता तो देता है किंतु घटता बढ़ता है, समुद्र (गांभीर्य के लिये) खारा है । कामदेव सुन्दर तो है — पर शरीर - रहित है, राजा बलि भी दानशील तो था पर दितिपुत्र (दैत्य) था, कामधेनु, कामनाओं की पूर्ति तो करती है किंतु वह तो पशु है । इनमें से कोई भी तो ऐसा नहीं जो आपका उपमान बन सके, फिर

thearyasamaj.org

हे राघव, किसकी उपमा दी जाये ? अर्थात् आप गुणों की दृष्टि से अप्रतिम हैं, अनुपम हैं, अतुलनीय हैं ।

यह चाणक्यनीति के अध्याय-१२ का श्लोक १६ है । इसमें आचार्य ने जहाँ वास्तविक पदार्थों का प्रयोग किया है जैसे सूर्य, चन्द्र, समुद्र आदि वहीं मिथकों का प्रयोग भी किया है, यथा कल्पतरु, सुमेरु, चिंतामणि, कामधेनु आदि । हम मिथकों को लेकर आचार्य से असहमत हो सकते हैं पर उनकी जो भावना है उससे असहमत नहीं हो सकते ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चाणक्यनीति में भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम का बड़ा ही आदर्श एवं अनुकरणीय चित्रण मिलता है । कहने को बहुत कुछ कहा गया, बहुत कुछ लिखा गया, तोते की तरह रामनाम, कृष्णनाम को दिन रात रटा गया, जपा गया, किंतु कमी यह रही कि हमने उनके गुणों में से एक भी तो गुण कभी ग्रहण नहीं किया, न उनके अनुसार कभी आचरण किया । जो हुआ सो हुआ, बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले, अब तो हम चेतें, अब तो आँखें खोलें । क्या हम तब जागेंगे जब सर्वनाश हो चुकेगा, हमारा अस्तित्व मिट जाने के कगार पर जा पहुंचेगा, हमारा धर्म, हमारी संस्कृति, हमारा इतिहास सब बर्बाद हो चुकेगा,

तब जागे तो क्या जागे,
का वर्षा जब कृषि सुखानी ।

खेती ही सूख गई तो बरसात का क्या करेंगे ? फिर तो हम पर यही चरितार्थ होगा कि —

अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत । यदि हम अपने धर्म, इतिहास और महापुरुषों के विषय में बताई गई महर्षि दयानन्द की बातें मान लेते तो आज ये दिन न देखने पड़ते । ईश्वर हम पर कृपा करें, हमें प्रेरणा दें, हमें सद्बुद्धि दें कि हम अपने को पहचानें, अपने पुरखों को पहचानें, अपने धर्म को सही स्वरूप में मानें तब जाकर कहीं हमारे दोष और विकार नष्ट होंगे और पुनः हम सारे संसार के सिरमौर बन सकेंगे । कवि के इन शब्दों पर ध्यान दें —

कुर्सीनामा देखो, तुम वीरों की संतान हो ।
राम, भरत बन जाओ भारत देश महान् हो ।
कृष्ण की गीता को, जिस दिन भी समझ जाओगे ।
बनकर धनुर्धर अर्जुन, रण में विजय पाओगे ।
पापों की लंका को बन राम ध्वस्त करना है ।
मस्तक भारत भू का जग में ऊँचा करना है ।

०९४१६२९४३४७
०१६८१-२२६१४७

जवाहर नगर, पटियाला चौक जींद
हरियाणा-१२६१०२

thearyasamaj.org

योग ही समस्त मानव में एकत्व भावना ला सकता है

–श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

विश्व में मानव चेतना ही प्रधान है । इस चेतना को जागृत एवं सबमें एकत्व भाव लाने के लिये एक मात्र योग है । इसी योगाभ्यास से परिवार से लेकर समाज एवं सारे देश परस्पर अपने को एक कुटुम्ब समझने लगता है । योग से इतनी दैवी शक्ति प्राप्त होती है कि वह सबमें सर्वोदयी भावना उत्पन्न कर देती है, उसीसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जागृत होती है । वेद ने जिसे आत्मावत्सर्व भूतेषु की भावना प्रतिपादित की है । जीयो और जीने दो--ये सर्वराज्य की उदात्त भावनायें हैं । ऐसे राज्य में अभिन्नता की भावना नष्ट हो जाती है । अतः यदि सबका साथ मिले तो उससे सबका विकास संभव होने लगता है ।

जब मानव योग का अभ्यास करने लगता है तो उन्हें आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होने लगती है। परस्पर का द्वेष भाव समाप्त होने लगता है । अभिन्नता और बदले की भावना नहीं रहती । ऐसे योग से युक्त जन की बुद्धि और वाणी में ओज और तेज विद्यमान रहता है । वह ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि — मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे ॥ (यजु० अ० ३६-मं० १८) मैं मित्र की प्रेमपूर्ण दृष्टि से सब प्राणियों को देखूँ और मैं भी सब प्राणियों के द्वारा मित्रता पूर्ण प्रेम दृष्टि से देखा जाऊँ । अर्थात् न मेरा कोई शत्रु हो और न मैं किसी का शत्रु बनूँ । इस प्रकार की भावना परस्पर होनी चाहिए । तभी समाज में भ्रातृ-भाव, मैत्री, प्रीति, सौजन्य, सहानुभूति, सहृदयता, समान वृद्धि एवं सर्वाभ्युदयकारी भावनायें वृद्धि को प्राप्त कर सकती हैं ।

सच्चे योग के अभ्यास से मानव मनुर्भव बन जाता है । वह अनैतिक कार्य नहीं कर सकता और न वह किसी को बलात्कार, भ्रूण हत्या व भ्रष्टाचार करने देता है । योग करने वालों की आत्मा अधर्म की ओर जाने से रोकने लगता है ।

ऋषि वैज्ञानिक पतंजलि ने योग में प्रवेश के लिये सर्वप्रथम यम-नियमों को पालन करने का आदेश दिया है । जैसे आसनों को करने से शारीरिक लाभ होता है, वैसे ही यौगिक क्रियाओं से आध्यात्मिक लाभ होता है । योगाभ्यास करने के पहले यदि यम-नियमों का पालन न किया जाय तो योग का वास्तविक फल योग करने वालों को प्राप्त नहीं होता, इसलिये पहले 'यम-नियमों' को अपनाना आवश्यक है — तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहाः यमाः । (योग सा०)

शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानिनियमाः । (योग सा०)

सत्य – मन, वचन और क्रिया तीनों में सत्य के प्रतिष्ठित होने से योगदर्शन भाष्यकार व्यास के लेखानुसार, योगी की वाणी अमोघ हो जाती है । **अस्तेय** – मन, वाणी और क्रिया से किसी की भी चोरी न करना । **अहिंसा** – मन, वाणी और क्रिया से किसी भी प्राणी को तकलीफ न देना।

thearyasamaj.org

अपरिग्रह – न्यायपूर्वक धनादिका संग्रह एवं भोग करें । **ब्रह्मचर्य –** शरीर में उत्पन्न हुए रजवीर्य की रक्षा करते हुए लोकोपकारक विद्याओं का अध्ययन करना ।

नियम – अपने कर्म के फल से दुःखी न होना पड़े इसलिये योगी को नियमों का पालन करना चाहिये । **शौच–**बाह्य और अन्तःकरणों को शुद्ध रखना । **सन्तोष –** पुरुषार्थ से जो कुछ प्राप्त हो उससे अधिक की इच्छा न करना । **तप –** शीतोष्ण, सुख-दुःखादि को एक जैसा समझते हुए नियमित और संयमित जीवन व्यतीत करना । **स्वाध्याय–**ओंकार का श्रद्धापूर्वक जप करना और वेदादि सत्य शास्त्रों का अध्ययन करना । **ईश्वर प्रणिधान –** ईश्वर का प्रेम हृदय में रखते हुए और ईश्वर को अत्यन्त प्रिय परम गुरु समझते हुए अपने समस्त कर्मों को उसके अर्पण करना ।

योग – ''युज्'' धातु से योग शब्द सिद्ध है, जिस धातु के अर्थ मिलना-जुलना आदि के हैं युज्यतेऽसौ योगः । जो युक्त करे, मिलावे उसे योग कहते हैं ।

योगियों के मुकुटमणि, योग शिरोमणि पतंजलि ने योग की परिभाषा इस प्रकार की है — योगश्चित वृत्ति निरोधः। (योग दर्शन १-२) अर्थात् — चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है । चित्त की वृत्तियाँ क्या है ? जब वह बाहर काम करता है तब उसका नाम बहिर्मुखी वृत्ति होता है और जब अन्तर काम करता है तब उसका नाम अन्तर्मुखी वृत्ति होता है । जीव चूँकि प्रयत्नशील है, इसलिये दोनों वृत्तियों में से एक न एक सदैव जारी रहती है । बहिर्मुखी वृत्ति जब जारी रहती है तब जीव अन्तःकरणों के माध्यम से जगत् में इन्द्रियों द्वारा काम किया करता है, परन्तु जब अन्तर्मुखी वृत्ति ध्यान द्वारा ठहर जाता है तब आत्मानुभव और परमात्म दर्शन होने लगता है ।

एकान्त एक आसन में बैठकर अन्तर मन से श्रद्धापूर्वक जब ओम् प्रणव को प्राण के समान बोध करते हुए उसके तरफ ध्यान किया जाता है तब मन की वृत्तियाँ भी उसी की ओर एक होकर मनके साथ हो जाती है । उस अवस्था में जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका के ध्यान में डूबा रहता है । जैसे विद्यार्थी विद्याध्ययन में लगा रहता है । जैसे लेखक कोई नये लेख के लिखने में वह रमा रहता है, उस समय (उन तीनों के सामने कौन आया और कौन गया, कब चाय दिया गया, कौन क्या कह रहा था) कुछ भी भान नहीं होता । वैसे ही योग करने वाले का जब स्वस्वरूप के साथ हृदय या भृकुटी में अपने इष्टदेव को जानने की इच्छा से ध्यान एक हो जाता है, तब मन के साथ प्राण भी एक होने लगता है (क्योंकि प्राण से मन का सम्बन्ध है) फिर कुछ दिन के अभ्यास से अपने आत्मा का स्वरूप, प्रकाश के रूप में (उस अवस्था में) दिखने लगता है । इस योग क्रिया से अनेक लाभ होते हैं । प्रथम तो योग करने वाले का मन शिव संकल्प वाला हो जाता है । उसकी वाणी, आकर्षणीय हो जाती है और परमात्मा की कृपा से असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माअमृतंगमय की ओर जाने लगता है ।

योगाभ्यास करने के पहले – सर्वप्रथम दीर्घस्वासन १० बार लम्बा स्वांस लें और छोड़ें । उसके पश्चात कपालभाति (लोहार की धौकनी की तरह) २५ या ५० बार करें । उसके एक मिनट

thearyasamaj.org

बाद अनुलोम-विलोम (नाड़ी शोधन प्राणायाम) १५ से २० बार करें । (यह सभी प्राणायाम यथा शक्ति करें) उसके पश्चात रेचक, पूरक और कुम्भक प्राणायाम में प्रथम रेचक प्राणायाम को सिद्ध करें, मूलेन्द्रिय को खींच रक्खें, वायु को बल से बाहर फेंककर बाहर ही रोके, जब श्वांस लेना चाहें तो वेग से वायु को बाहर निकाल दें, पुनरपि वैसे ही करें । (साथ ही प्राणायाम मंत्रों का जप करते रहें) ध्यान को हृदय अथवा भृकुटी में स्थिर करें । इस प्रकार रेचक का कुम्भक प्राणायाम तीन बार करें । इन क्रियाओं से ऊर्जा की प्राप्ति, बुद्धि का विकास और मन तथा शरीर पवित्र हो जाता है । परन्तु जिस दिन उदर ठीक न रहे, गैस रहे उस दिन रेचक प्राणायाम न करें । योग एवं सारे प्राणायाम के अंत में ५ बार भ्रामरी अवश्य करें ।

हमारे आचार्य जी सन्ध्या योग रहस्य में लिखे हैं कि सन्ध्या के माध्यम से परमात्मा में चित्त वृत्ति को लगाने के लिये सर्वप्रथम ३ प्राणायाम करने चाहिये । जो प्राणायाम, बिना मंत्र-जप के साथ होता है, (जैसा कि बाबा रामदेव दिखाते हैं) उससे शारीरिक लाभ तो होता है, परन्तु मन को ध्यान के लिये कोई आधार प्राप्त नहीं होता । अतः इस प्राणायाम के समय मन को ओम् मंत्र के जप में नियुक्त करना चाहिये । अतः इन तीनों प्राणायाम में मन से ओम् भू। ओम् भुवः, ओम् स्वः, ओम् महः, ओम् जनः, ओम् तपः, ओम् सत्यम् का जप करते रहना चाहिये, यही मन को ध्यान में प्रवृत्त करने के लिये पहला पाठ है ।

ओम् प्रणव सर्वरक्षक है । परमात्मा प्राणों का भी प्राण है । उससे हमारा प्राण सम्बन्धित है, अतः मैं परमात्मा के प्राण से प्राणवान् हो रहा हूँ । मेरे दुःख उसकी भुवः शक्ति से दूर होते हैं, मुझे में आनन्द का प्रवाह उसी आनन्द स्वरूप से आ रहा है । ऐसे प्रभु का हम वरण करके उसके भर्ग को धारण करने से हमें उसका शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है । वह हमारा गुरु है क्योंकि वह समस्त ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है । वह आचार्य है, हमें वह शुभगुण, कर्म, स्वभाव युक्त आचार प्रदान कर अपनी कृपा बरसायेगा । इसी प्रकार की भावना करें ।

नित्य प्रातः प्राणायाम की वृद्धि करते रहने से प्राण दीर्घ और सूक्ष्म होता रहता है, साथ ही मन का मैल साफ होने लगता है, इसका फल यह होता है कि 'ध्यानं निर्विषय मनः' ध्यान में मन विषयों से हटकर अपने किसी श्रद्धा के लक्ष्य पर एकाग्र होने लगता है । मन का प्राण से सम्बन्ध होने से, मन गायत्री मंत्र के जप से भी एकाग्र होने लगता है और इस एकाग्रता के प्रभाव से प्राण का भी स्तम्भन होने लगता है और तब उनके योग से आध्यात्मिक प्रकाश का आनन्द योगी को प्राप्त होने लगता है । यह सब आध्यात्मिक विज्ञान का बहुत कठिन मार्ग है ।

मु०पो० मुरारई,
जिला-वीरभूम
पं० बंगाल-७३१२१९

thearyasamaj.org

(कवर शेष पृष्ठ २ का)

शोक समाचार :- आर्य समाज हावड़ा के पूर्व प्रधान श्री पुरूषोत्तम लाल जी सर्राफ का आकस्मिक निधन बृहस्पतिवार ०८-०१-२०१५ को हो गया है ।

आर्य समाज कलकत्ता दिनांक ११-०१-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर आदरणीय सर्राफ जी के निधन पर हार्दिक सम्वेदना व्यक्त की गयी तथा परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा के शान्ति एवं सद्गति प्रदान करने तथा शोकसन्तप्त परिवार को इस वियोगजन्य दु:ख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने की प्रार्थना की गयी ।

आर्य जगत् समाचार

ब्र० आचार्य राजसिंह जी दिवंगत

आर्य समाज के कर्मठ, युवा, समर्पित तथा सुयोग्य विद्वान् तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान आचार्य ब्र० राजसिंह जी का आकस्मिक निधन सोमवार दिनांक ०५-०१-२०१५ को लगभग ६२ वर्ष की आयु में दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में हो गया । आपके निधन से समूचा आर्य जगत् स्तब्ध रह गया । यह आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है ।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक ११-०१-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर एकत्रित समस्त आर्य जनों ने आचार्य जी के निधन पर हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की ।

आर्य संन्यासी स्वामी ब्रम्हानन्द की अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए आप सबको एक नम्र निवेदन ।

भुवनेश्वर, ओडिशा, २०वीं शताब्दी के मध्यभाग में ओडिशा में आर्यसमाज को प्रतिष्ठित करने के लिए पूज्य स्वामी ब्रम्हानन्द सरस्वतीजी की भूमिका को प्राय समस्त आर्यजनता जानते हैं । स्वामीजी ८६ वर्ष के जीवनकाल में ३२ गुरुकुल और अनेक अनुष्ठान करके २००१ ई० में स्वर्ग सिधार गए । १९५४ ई० में राउरकेला के पवित्र वेदव्यास पीठ में गुरुकुल आश्रम की प्रतिष्ठा स्वामीजी की एक अक्षय कीर्ति है । स्वामीजी की एक अंतिम इच्छा थी कि ओडिशा के राजधानी भुवनेश्वर में गरीब जनता के संस्कार के लिए एक संस्कार मंडप की स्थापना करेंगे । जहाँ पर एक हजार रुपये में समस्त संस्कार कार्य पूर्ण होगा । इसलिए भुवनेश्वर के मध्य भाग में ३५०० वर्ग फीट की एक जमीन स्वामीजी को दान स्वरूप मिला था । २००० वर्ग फीट जगह में गृह निर्माण के लिए भुवनेश्वर उन्नयन कर्तृपक्ष आवश्यक नक्शा अनुमोदन किए हैं । लेकिन आर्थिक अभाव के कारण स्वामीजी की अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए हम सब असमर्थ हैं । अनुमान लगाया जाता है कि एक वर्ग फीट के लिए १४०० रुपये खर्च होने की संभावना है । इसलिए दान दाताओं से अनुरोध है कि इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए सहयोग करें । हम सदैव उनके कृतार्थ रहेंगे । एक लाख चालिस हजार रुपये दान देने वाले दाताओं का नाम द्वार पर लिखा जाएगा । (उदाहरण रामप्रसाद स्मारक द्वार)

– आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र
भूतपूर्व सी.बी.आई. वकील
सभापति-स्वामी दयानन्द सर्विस मीशन
३३१/१९४१, श्री अरविन्द नगर
भुवनेश्वर-७५१०१६

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३